नई पीढ़ी के अंग्रेजी आलोचक पत्रकार

शर्मा के अलावा कोई और ऐसा लेखक नहीं जिसे सामान्य से कुछ ऊंचे स्तर के पाठक पढ़ना चाहें। दूसरे लेखक तो केवल व्यवसायिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये लिखते हैं।

इस क्षेत्र में सम्भवतया श्री ओमप्रकाश शर्मा ही एक मात्र लेखक हैं जो अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से मुक्त है। उनका हीरो सी. आई. बी. का आदर्श एवं केवल विवाहित जासूस है। उनकी लेखन शैली बहुत सुघड़ है इसलिए नकल करने वालों के लिए कठिन है और इसकी नकल करना आसान नहीं है यद्यपि पिछले कुछ समय में कुछ लोगों ने इसका प्रयत्न किया है। इस दृष्टि से शर्मा जी वो लेखक है जिन्होंने काफी मेहनत व प्रयत्नों से जन-प्रियता हासिल की है।

श्री शर्मा सीधे सादे ढंग से अपनी बात कह देते हैं। उनके पात्रों को किसी भी रूप में वेश परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती तथा कथानक दूसरे उपन्यासकारों की अपेक्षा सत्यता के अधिक नजदीक होता है।

श्री डी. एन कल्हन ने श्री ओमप्रकाश शर्मा की तुलना जासूसी साहित्य के जनक बाबू देवकीनन्दन खत्री (जिनसे प्रारम्भ में शर्मा जी को प्रेरणा मिली) से करते हुये कहा है— "उनकी कहानी इधर उधर नहीं घूमती एवं प्रखर व्यक्तित्व वाले उनके पात्र अपनी विशेषताओं एवं कमजोरियों से युक्त होते हैं। कहानी का स्थान बड़ा शहर हो अथवा गांव घना जंगल या भव्य महल केवल काल्पनिक नहीं होते। रहस्य-रोमांच होता है पर वो बड़ी सुघड़ता से बुनालगता हैं।

राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय कोई भी समस्या उनकी दृष्टि से नहीं बचती चाहे तो वियतनाम हो, भारत नेपाल सीमा पर तस्कर व्यापार हो अथवा पाकिस्तान हो। हाल ही में बंगला देश की समस्या को लेकर भी उन्होंने लिखा है। उनकी समस्या को प्रस्तुत कर उसका निदान भी प्रस्तुत करने की क्षमता काफी सूझ बूझ वाली प्रभावशाली होती हैं।

परन्तु शर्माजी की देन केवल यही नहीं हैं। उनका एक पात्र जगन हैं—जो रिश्वत भी लेता है और सैक्स के मामले में भी पड़ता है पर उसकी बुद्धिमानी उसे कानून से बचाती है। उसके तर्क के अनुसार वो उन्हीं से रिश्वत लेता है जो काले धन से सीधे सम्बन्धित होते है। उनसे पैसा निकालने में कोई दोष नहीं, कोई पाप नहीं यद्यपि उनके दो प्रमुख पात्र राजेश व सहकारी जयंत पिछले दशक से अपनी जगह बने हैं परन्तु फिर भी वह अपने पात्रों में परिवर्तन कर अन्य जासूस पेश करते रहे हैं। यहीसब कुछ ऐसा है जो श्री ओम प्रकाश शर्मा को भारतीय जासूसी साहित्य में एक विशिष्ट लेखक के रूप में प्रतिष्ठित कर देता हैं।

मैं श्री डी. एन. कल्हन की इस बात से सहमत हूं कि श्री शर्मा ने, उनके उपन्यासों ने, लोकप्रिय और गम्भीर साहित्य के बीच एक पुल बनाया है और यह अच्छी आवश्यकता है। अगर मेरी पन्द्रह साल की अपराध साहित्य की पढ़ाई मुझे धोखा नहीं देती तो मैं श्री शर्मा के लक्ष्य से परिचित हूं। उनके उपन्यासों का लक्ष्य अपराधी में सुधार लाना है और यह एक अच्छा मिशन है।

(ट्रिब्यून चण्डीगढ़ के सौजन्य से)